

2053. तत्मुषेणामतं कार्यं देशकालोपपादितम् dem Orte und der Zeit angepasst R. 4, 43, 66. — 6) Jmd (acc.) mit Etwas (instr.) versehen: तं त्वमन्वेन समंसेनोपपाद्य MBh. 1, 6724. वेतनेनोपपादितः 6, 3321 = 7, 4445. आत्मानं प्रथमं राजा विनयेनोपपादयेत् Spr. 333. begleitet sein lassen von: अनुतिष्ठेत्समारब्धमनारब्धं प्रयोञ्जयेत् । अनुष्ठितं च सदृच्या विशेषोपपादयेत् ॥ Kām. Ntris. 11, 57. Hierher könnte auch das letzte Beispiel unter 3 gezogen werden. — 7) Jmd zu Etwas machen, für Etwas erklären: कथमीश्वरं विकारिणं कृत्वा विनाशधर्मिणामुपपादयसि Prab. 111, 17. — 8) hinter Etwas kommen, ausfindig machen: (देशम्) दक्षिणाप्रवणं प्रपत्नेनोपपादयेत् M. 3, 206. तर्कयामास भैमीति कारणैरुपपादयन् MBh. 3, 2663. R. 5, 18, 22. — Vgl. उपपादक fig., उपपाद्य.

— अभ्युप 1) Jmd (acc.) zu Hilfe eilen, Jmd helfen MBh. 7, 3663. तं कृच्छ्रगतमद्य कस्मान्नाभ्युपपद्यसे 10, 608. R. 3, 66, 17, 72, 18, 5, 26, 32. र-तिमभ्युपपत्तुमातुरा मधुरात्मानमदर्शयत्पुनः Kumāras. 4, 25. कदा — तपः-कृशामभ्युपपत्स्यसे सर्षो वषेव सीता तद्वग्रकृतपात् 5, 61. — 2) Jmd um Hilfe angehen R. 3, 14, 7. अभ्युपपन्नवत्सल Mbh. 108, 5. — 3) Jmd mit Etwas versehen: काञ्चिद्विद्याविनीतांश्च नरान् — यथार्हं गुणतश्चैव दानिनाभ्युपपद्यसे MBh. 2, 187. — Vgl. अभ्युपपत्ति.

— प्रत्युप, प्रत्युपपन्नमतिव = प्रत्युत्पन्न^o (s. u. प्रत्युद्) Çāk. Cu. 103, 1. — समुप zu Stande kommen: यथा त्वत्कार्यं समुपपद्यते । अग्रमत्ता न-गनाथ तथा कुरू MBh. 2, 779. — caus. fertig machen, zubereiten: संपन्नद्वैर्बहुभिर्मतिः समुपपादितैः R. 5, 14, 45.

— नि 1) sich niederlegen, ruhen, rasten: यथाक्रामं नि पद्यते RV. 10, 146, 5. AV. 11, 4, 25. At. Br. 7, 15. एष कीदं सर्वं गोपपत्ययो न निपद्यते Çat. Br. 14, 1, 4, 9. 9, 2, 3. Pañkav. Br. 17, 12, 5. — 2) sich niederlegen bei Einer (acc.) zum Beischlaf: यस्त्वा जग्रा भूत्वा निपद्यते RV. 10, 162, 5. AV. 8, 6, 7. देवा अग्रे न्यपद्यन्त पत्नीः 14, 2, 32. Çat. Br. 11, 5, 1, 1. — Vgl. अनिपद्यमान, निपाद्. — caus. niederlegen Çat. Br. 12, 5, 2, 7, 1, 2, 5, 6. fällen, niederschlagen: नि मायिनो माया अपादयत् RV. 2, 11, 10.

— अनुनि sich niederlegen neben: सा पत्यावनुनिपद्यते Kauç. 60. त-मन्वङ्गमन्यपद्यत Çat. Br. 14, 1, 1, 12.

— उपानि dass. RV. 1, 152, 4. नारी नि पद्यत उपं ला मर्त्यं प्रेतम् AV. 18, 3, 1. — caus. sich niederlegen heissen: मर्क्षीमश्चापोपनिपादयति Çat. Br. 13, 5, 2, 2 (Āçv. Ça. 10, 8 fälschlich ऽपातयति). hinlegen an: पाणिनैव प्रधंस्येदञ्चमुपनिपादयेत् 4, 1, 4, 28.

— परिणि P. 8, 4, 17, Sch.

— प्राणि P. 8, 4, 17, Sch. Vop. 8, 22, 11, 7.

— निम् 1) herausfallen, entfallen: नेम् ऽग्निर्यश्चानरो मुखानिप्यद्यति Çat. Br. 1, 4, 1, 10. 18. 18. 19. येना रतो युक्ते न निपद्यते 6, 4, 2, 7. 10, 2, 2, 18. — 2) hervorgehen, entstehen, gerathen, reif werden, zu Stande kommen, fertig werden: अञ्जनादपि निप्यनैर्वामनादपि च द्विपैः R. 1, 6, 23. निप्यन्नममृतं यामिः (शोषधिभिः) 5, 2, 32. भागसकृत्तत्त्वादिस्थानेषूर्ध्वभागे निप्यन्नो ऽच् P. 1, 2, 29, Sch. बल्लवचने निप्यन्नो ऽमीशब्दः Vop. 2, 20. धा-त्वर्थान्निप्यन्ते 26, 179. निप्यद्यते च सस्यानि यथासानि M. 9, 247. निप्यन्न-शालीक्षुवादिदस्यम् Varāh. Brh. S. 8, 80. 19. 3. 94, 34. निप्यद्यते वदना-दिव्यापारेण स एव (उपकारः) Çāk. zu Brh. Ār. Up. S. 83. निप्यन्नः ख-ङ्गः fertig Varāh. Brh. S. 49, 8. वस्तु zu Stande gekommen, vollendet P. 1, 4, 95, Sch. मित्रव Hit. 38, 18. भोजनं fertig geworden, zubereitet (Speise)

IV. Theil.

SOM. NAL. 160. vollbracht, vollendet (die Mahlzeit) RĀGA-TAR. 6, 262. अर्घनि-प्यन्न (चक्रमठ) 5, 403. निप्यन्ना मेकाक्रिया 4, 234. कार्यशेष KATHAS. 34, 139. कर्तुर (abl.) धात्वर्थे निप्यन्ने Vop. 18, 18. विचार्य तन्मया सर्वम् — कृतं त-ञ्चापि निप्यन्नम् MĀRK. P. 44, 14. स्थिरपौवननिप्यन्न wohl durch bestän- dige Jugend in einem vollendeten Zustande sich befindend 60, 3. नि-प्यन्न = सिद्ध, निर्वृत्त AK. 3, 2, 50. H. 1487. — Vgl. निप्यत्ति, 2. निप्यद्. — caus. hervorbringen, zu Stande —, zur Reife bringen, bereiten, voll- bringen, ausführen: सुवर्षेणैव मुनेत्रे सस्यं निप्यद्यतां तव R. 4, 6, 20. प-श्चादुत्तं निप्यद्येत् Varāh. Brh. S. 39 (38), 9. निप्यदितास्वोषधीषु MĀRK. P. 16, 39. तत्र संरक्ष्यमाणः सन्स गर्भः शोभैर्वर्षीः । निप्यद्याद्दमकृत्त्रेण (unter निप्यद्य ist diese Stelle demnach zu streichen) कुमरो ऽभूत्पडा- ननः ॥ zur Reife bringen KATHAS. 20, 87. निप्यदितश्च कात्स्न्येन भगव- द्विधीपालुभिः zu Stande gekommen, meine Existenzen: verdankend Bañg. P. 4, 22, 43. वेष्मनाम् । कोटिं निप्यद्य RĀGA-TAR. 1, 86. त्वं तावदेकं पटं नि- त्त्वमेव निप्यद्यसि Pañkāt. 281, 16. कविकल्पद्रुमम् Verz. d. Oxf. H. 173, 6, 10. तावद्वाक्शय्या भोजनं निप्यदितम् :ubereitet Ver. in LA. 17, 17. य- निप्यद्यति तत्पालम् Suçr. 1, 132, 2. कर्म MBh. 5, 797. RĀGA-TAR. 3, 176, 4, 438. Bhāg. P. 1, 13, 47. 5, 14, 1. MĀRK. P. 18, 3, 20, 26. 21, 94. 23, 18, 39, 34. 75, 64. Prab. 5, 4. राज्यम् regieren RĀGA-TAR. 5, 21. med.: तथा रा- ज्युच्यया सह यथासमीकितं निप्यद्यस्व vollbringe, führe aus Pañkāt. ed. ori. 32, 23. सैक्यावा विद्याकृतं वीर्यं सामर्थ्यं कारवावैके निप्यद्यावैके an den Tag legen Çāk. zu KATHOP. 6, 19. — Vgl. निप्यद्वा figg.

— अभिनिम् 1) gelangen zu: एतां दिशमभिनिप्यद्य Çat. Br. 13, 8, 4, 9. — 2) eingehen in, werden zu (acc.): इमेवाकाशमभिनिप्यद्यते Çat. Br. 14, 9, 1, 19. नक्तमहोवाभिनिप्यद्यते Kūhānd. Up. 8, 4, 2 (1). — 3) hervor- treten, erscheinen: स्वेन रूपेणाभिनिप्यद्यते in ihrer eigenen Gestalt Kūhānd. Up. 8, 12, 2. Çāk. bei Wind. Sañcara S. 124; vgl. अभिनिप्यत्ति. — caus. hineinbringen in, Jmd verhelpen zu: प्रज्ञा चतुरो धर्मान्नाक्ष- णमभिनिप्यद्यति Çat. Br. 11, 5, 2, 1.

— परि, partic. परिपन्न n. Umwandlung (des म vor र् und den Zisch- lauten in den Anusvāra): रेफोष्मणोरुदययोर्मकारो ऽनुस्वारं तु तत्परि- पन्नमाङ्गः RV. Prāt. 4, 5, 7, 3, 11, 15, 7. — caus. umwandeln (in dem- selben grammatischen Sinne) RV. Prāt. 14, 11. Die Worte कालक्रमा- दुपादानं परिपद्य beim Schol. zu RV. Prāt. 2, 1 übersetzt REGNIER durch en faisant la prononciation, la lecture selon l'ordre des temps (rich- tiger: nach der Ordnung der Moren).

— प्र 1) antreten an, eintreten in, betreten, besuchen, gelangen zu. kommen zu, gerathen in; sich aufmachen nach, sich begeben zu, in: निष्क्रामिताम् प्रपद्येताम् Çat. Br. 4, 3, 4, 9. इन्द्रस्य गृहे ऽसि तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि AV. 5, 6, 11. देवपुराम् 4, 1, 64. तमे एतत्पुरुषं मा प्र प- द्याः 8, 1, 10. वेष्म Kūhānd. Up. 8, 14. परिश्रितानि At. Br. 1, 13. VS. 3, 43. Çat. Br. 7, 4, 1, 40. 8, 2, 21. स्वर्गं लोकम् 1, 6, 4, 19. द्वारा 2, 3, 2, 14 u. s. w. Pār. Gṛha. 3, 4. At. Up. 3, 12. — 11. Kūhānd. Up. 3, 15, 3. figg. 8, 13. Taitt. Up. 1, 4, 3. योनिमन्ये प्रपद्यते शरीरवाप देकिनः KATHOP. 5, 7. KA- THAS. 22, 58. अचतुर्विषयं दुर्गं न प्रपद्येत कर्कचित्तं M. 4, 77. अधानम् u. s. w. sich auf den Weg machen, einen Weg betreten. auf einen Weg kommen M. 4, 60. MBh. 12, 11843. R. 2, 46, 29. 70, 26. R. Gora. 2, 46, 4. 5, 34, 10. Kumāras. 3, 5. पुरुषो यया (गत्या) प्राप्यं प्रपद्यते an sein

28